



सरदार वल्लभभाई पटेल

बंबई (मुंबई) की एक सभा में सिंह की तरह गरजते हुए एक देशभक्त ने कहा था कि, "अंग्रेज भारत को जितनी जल्दी आजाद कर दें, उतना ही अच्छा। यदि देरी की गई, तो यह उन्हीं के लिए खराब बात होगी।" यह सिंह गर्जना करने वाले व्यक्ति थे लौहपुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल।

वल्लभभाई पटेल का जन्म 31 अक्टूबर 1875 को गुजरात के पेटलाद तालुके के करमसद गाँव में हुआ था। उनके पिता का नाम झबेर भाई पटेल और माता का नाम लाड़बाई था। झबेर भाई किसान थे।



सरदार पटेल के बचपन की एक घटना है। उनकी आँख के पास एक फोड़ा निकल आया। बहुत दवा दी गई पर ठीक न हुआ। किसी व्यक्ति ने सलाह दी कि लोहे की सलाख खूब गर्म करके फोड़े में धँसा दी जाए तो फोड़ा फूट जाएगा। सलाख गर्म की गई किंतु किसी में यह साहस न होता था कि गरम सलाख को फोड़े में धँसाए। भय यह था कि कहीं आँख में न लगे। इस पर बालक वल्लभ ने कहा, "देखते क्या हो, सलाख ठंडी हो रही है।" और फिर स्वयं ही उसे लेकर फोड़े में धँसा दिया। बालक के इस साहस को देखकर उपस्थित लोगों ने कहा कि यह बालक आगे चलकर बहुत ही साहसी होगा। बाईस वर्ष की उम्र में उन्होंने नाडियाद स्कूल से मैट्रिक परीक्षा पास की। फिर मुख्तारी परीक्षा पास करके गोधरा में मुख्तारी करने लगे।

कुछ समय बाद वल्लभभाई वकालत पढ़ने के लिए विदेश चले गए। जहाँ वह रहते थे, वहाँ से पुस्तकालय ग्यारह मील दूर था। वह नित्य प्रति सवेरे उठकर उस पुस्तकालय में जाते और शाम को पुस्तकालय के बंद होने पर ही वहाँ से उठते। अपने इसी अध्ययन के फलस्वरूप वह उस साल वकालत की परीक्षा में सर्वप्रथम रहे। इस पर उन्हें पचास पौंड का पुरस्कार भी मिला।



विदेश से लौटकर वह अहमदाबाद में वकालत करने लगे और थोड़े ही समय में अत्यंत प्रसिद्ध हो गए। इसी समय वह गांधी जी के संपर्क में आए। उन्होंने वकालत छोड़ दी और पूरी तरह तन-मन-धन से देश की सेवा में जुट गए।

सर्वप्रथम वल्लभभाई ने गोधरा में हुए प्रांतीय राजनीतिक सम्मेलन में गुजरात की बेगार-प्रथा को समाप्त करने के लिए एक प्रस्ताव पास कराया। इस सम्मेलन में पहली बार भारतीय भाषाओं का प्रयोग किया गया। वल्लभभाई के प्रयासों के फलस्वरूप गैरकानूनी बेगार प्रथा बंद हो गई। वल्लभभाई ने नागपुर के झंडा सत्याग्रह का नेतृत्व भी किया। इस सत्याग्रह के कारण अंग्रेज सरकार को समझौते के लिए झुकना पड़ा। इस सत्याग्रह के बाद उनका नाम सारे भारत में फैल गया।

सन् 1927 में बारदोली का प्रसिद्ध सत्याग्रह शुरू हुआ। किसानों पर सरकार ने लगान की दर बढ़ा दी। किसान वल्लभभाई के पास गए। इस तरह उनके नेतृत्व में आंदोलन प्रारंभ हो गया। उन्होंने गाँव वालों को इस तरह संगठित किया कि लगान मिलना तो दूर, गाँवों में अंग्रेज अफसरों को भोजन, रिहाइश और सवारी तक मिलना मुश्किल हो गया।

अंग्रेज सरकार ने इसके विरोध में बहुत अत्याचार किए। गरीब किसानों के घरों के ताले फौज के जरिए तुड़वाकर, सामान जब्त करके मालगुजारी वसूल करने की कोशिश की गई पर सरकारी खजाने में एक कौड़ी भी जमा न हुई। हजारों लोग जेल गए। उनकी गाय, भैंस तक जब्त कर ली गई पर उन्होंने सिर न झुकाया। यहाँ तक कि जब्त किए गए सामान को उठाने वाला कोई मजदूर नहीं मिलता था और न जब्त की गई जायदाद की नीलामी में बोली लगाने वाला कोई आदमी। महीनों तक यही हाल रहा। अंत में सरकार को झुकना पड़ा।

सन् 1929 में लाहौर में पूर्ण स्वराज्य की माँग की गई। अंग्रेज सरकार ने इसे नहीं माना। गांधी जी ने फिर से सत्याग्रह का नारा दिया और 12 मार्च को प्रसिद्ध डांडी यात्रा शुरू कर दी। इसके बाद 6 अप्रैल को नमक कानून तोड़कर उन्होंने नमक सत्याग्रह आरंभ किया। सरदार पटेल ने इस सत्याग्रह में भाग लिया। वह गिरफ्तार कर लिए गए और उनको तीन माह की कैद और 500 रु० जुर्माने की सजा दी गई। सरदार पटेल ने जुर्माना स्वीकार न कर उसके स्थान पर तीन सप्ताह और जेल में ही काटे।



सन् 1939 में द्वितीय विश्वयुद्ध प्रारंभ हो गया। अंग्रेज सरकार ने अपनी ओर से भारत के इस युद्ध में शामिल होने की घोषणा कर दी। इसका सर्वत्र विरोध हुआ। सरदार पटेल 17 नवम्बर 1940 को व्यक्तिगत सत्याग्रह के दौरान गिरफ्तार हुए, पर स्वास्थ्य खराब होने के कारण नौ महीने बाद रिहा कर दिए गए। 'भारत छोड़ो' आंदोलन के सिलसिले में अगस्त 1942 में वह फिर गिरफ्तार किए गए। अन्य सभी नेताओं के साथ 15 जून 1945 को वह भी छोड़े गए।

15 अगस्त 1947 को देश आजाद हुआ। सरदार पटेल ने गृहमंत्री का कार्यभार संभाला। स्वतंत्रता के बाद देश के सामने कई समस्याएँ आईं। सरदार पटेल ने अपनी सूझबूझ से इन सभी पर काबू पा लिया।

जिस कार्य के लिए सरदार पटेल को सदैव याद किया जाएगा, वह था देशी रियासतों का एकीकरण। जब अंग्रेज भारत छोड़कर जाने लगे तो देशी रियासतों को यह आजादी दे गए कि वह चाहें तो आजाद रह सकते हैं, चाहें तो भारत या पाकिस्तान में मिल जाएँ। सरदार पटेल ने इस विकट समस्या को अपनी दृढ़ता और सूझबूझ से हल कर दिखाया और लगभग छह सौ रियासतों को भारतीय संघ का अटूट अंग बनाकर भारत के मानचित्र को नवीन स्वरूप प्रदान किया। संपूर्ण भारत में एकता स्थापित हो गई, इसलिए उन्हें भारत का लौहपुरुष कहा जाता है।

सरदार पटेल स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् केवल ढाई वर्ष जीवित रहे। वह अंतिम समय तक कठिन परिश्रम करते रहे। 15 दिसम्बर 1950 को दिल के दौरों से मुंबई (बंबई) में उनका निधन हो गया। भारत निर्माण में सरदार वल्लभ भाई के अविस्मरणीय योगदान के कारण वर्ष 1991 में भारत के सर्वोच्च सम्मान 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया।

सरदार पटेल की सफलता का मूल मंत्र था – कर्तव्यपालन और कठोर अनुशासन। अपने पचहत्तरवें जन्म दिवस पर उन्होंने राष्ट्र को संदेश दिया था – "उत्पादन बढ़ाओ, खर्च घटाओ और अपव्यय बिल्कुल न करो।"

यह भी जानिए –

स्टैच्यू ऑफ यूनिटी

'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' भारत के प्रथम उप प्रधानमंत्री तथा प्रथम गृहमंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल को समर्पित एक स्मारक है जो गुजरात प्रान्त में स्थित है। यह स्मारक सरदार सरोवर बाँध के निकट साधू बेट नामक स्थान पर है जो कि नर्मदा नदी पर एक टापू है।





शब्दार्थ

देशभक्त = देश के प्रति प्रेम तथा भक्ति का भाव रखने वाला

लौहपुरुष = वल्लभभाई पटेल को उनके साहस एवं मन की दृढ़ता के लिए लोगों द्वारा दी गई उपाधि

बेगार-प्रथा = बिना मजदूरी के बलपूर्वक कराया जाने वाला काम

सत्याग्रह = सत्य के प्रति आग्रह

अपव्यय = फिजूलखर्ची

जुर्माना = दंड

नासूर = वह घाव जो जल्दी भरता नहीं

गैरकानूनी = नियम विरुद्ध

जायदाद = संपत्ति

जनसेवा = जनता की सेवा

निरंतर = लगातार

1. बोध प्रश्न : उत्तर लिखिए -

- (क) वल्लभ भाई पटेल का जन्म कब और कहाँ हुआ ?
- (ख) बारदोली का सत्याग्रह आंदोलन क्यों हुआ ?
- (ग) बारदोली के सत्याग्रह आंदोलन में सरकार क्यों झुकी ?
- (घ) वल्लभभाई पटेल की देश को सबसे बड़ी देन क्या है ?

2. पटेल जी के उस कथन को लिखिए -

- जिसे उन्होंने बम्बई (मुम्बई) की सभा में कहा था।
- जिसे उन्होंने अपने पचहत्तरवें जन्मदिवस पर कहा था।

3. इस पाठ को कितने अनुच्छेदों में लिखा गया है ? प्रत्येक अनुच्छेद की मुख्य बात एक-एक वाक्य में लिखिए।

4. सोच-विचार : बताइए -

- (क) बेगार प्रथा क्यों बुरी थी ?
- (ख) नमक कानून क्यों तोड़ा गया ?
- (कठिनाई होने पर शिक्षक की मदद ले सकते हैं।)



5. भाषा के रंग —

(क) नीचे दिए गए वाक्यों में प्रयुक्त क्रिया-विशेषण शब्दों को छाँटकर लिखिए —

- वह निरंतर बढ़ता जा रहा था।
- वल्लभभाई ने काम बड़ी लगन से किया।
- उनका नाम सारे भारत में तेजी से फैल गया।

(ख) नीचे दिए गए वाक्यों में क्रिया-विशेषण शब्दों का प्रयोग करते हुए वाक्य पूरा कीजिए —

जैसे — वह से बोल रही थी। वह जोर-जोर से बोल रही थी

- लड़का बोल रहा था।
- शेर की दहाड़ सुनकर गीदड़ काँपने लगा।
- धावक रुक गया।
- राहगीर थक गया।

(ग) वाक्यांश के लिए एक शब्द लिखिए —

- साहस से युक्त व्यक्ति
- लोहे की तरह मजबूत तन-मन वाला पुरुष
- वकालत करने वाला
- अनाप-शनाप व्यय करने वाला
- जरूरी कार्यों के लिए व्यय करने वाला

(घ) नीचे लिखे शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए —
सत्याग्रह, आंदोलन, सूझबूझ, परिश्रम, सेनानी, सफलता

(ङ) नीचे लिखे अशुद्ध शब्दों की वर्तनी ठीक कीजिए —
अनुसाशन, स्वराज, सत्याग्रह, अंतराष्ट्रीय, रंगना, श्रृंगार, सवतंत्रता

(च) नीचे दिए गए कथनों को शुद्ध करके लिखिए —

- उनकी स्वास्थ्य रहता था ठीक नहीं।
- सरदार पटेल स्वतंत्रता संग्राम के महान सेना थे।



- वल्लभभाई के गैरकानूनी प्रयास से बेगार प्रथा हो गई बंद।

(छ) पाठ में से ऐसे पाँच वाक्य छाँटकर लिखिए जिनकी शुरुआत सर्वनाम शब्दों से हुई है। जैसे – वह अपना सारा समय अध्ययन में ही लगाते थे।

(ज) नीचे दिए गए दो वाक्यों को मिलाकर एक वाक्य बनाइए –
जैसे – सन् 1929 में लाहौर में पूर्ण स्वराज की माँग की गई। सरकार ने इसे नहीं माना। सन् 1929 में लाहौर में की गई पूर्ण स्वराज की माँग को सरकार ने नहीं माना।

- उनकी आँख के पास एक फोड़ा निकल आया। वह बढ़ता ही जा रहा था।
- किसी में साहस न होता था कि गरम सलाख को फोड़े में धँसाए। भय था कि कहीं आँख में न लग जाए।
- सरदार पटेल के सामने अनेक समस्याएँ आईं। उन्होंने बहुत सूझबूझ से सब पर काबू पा लिया।

6. तुम्हारी कलम से –

सरदार वल्लभभाई पटेल के जीवन से हमें क्या प्रेरणा मिलती है ? संक्षेप में लिखिए।

7. अब करने की बारी –

(क) देश की आजादी तथा नव निर्माण में हाथ बँटाने वाले दस महापुरुषों के बारे में जानकारी संकलित कीजिए।

(ख) महात्मा गांधी तथा सरदार वल्लभभाई पटेल का चित्र कला की कॉपी में बनाइए।

8. मेरे दो प्रश्न : पाठ के आधार पर दो सवाल बनाइए –

1.
2.

9. इस पाठ से –

- (क) मैंने सीखा –
- (ख) मैं करूँगी/करूँगा –